पवित्र शास्त्र में हम मानव आचरण से संबंधित दो प्रकार के नियम पाते हैं:
पहले, वे नियम जो सीधे परमेश्वर द्वारा आज्ञा दिए गए, और दूसरे, वे नियम जो मानवीय अगुओं या सामाजिक प्रथाओं के द्वारा स्थापित किए गए, जिन्हें परमेश्वर ने अपने लोगों के बीच अस्थायी रूप से अनुमति दी।

उदाहरण के लिए, इस्राएलियों को तलाक की अनुमति दी गई थी (व्यवस्थाविवरण 24:1), कुछ पापों जैसे व्यभिचार के लिए मृत्युदंड की व्यवस्था थी (व्यवस्थाविवरण 22:22), और लेक्स टालियोनिस का सिद्धांत—“आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत” (निर्गमन 21:24)—जिसका उद्देश्य न्याय को नियंत्रित करना और अत्यधिक दंड को रोकना था।

परंतु यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि ये नियम, यद्यपि तोराह में पाए जाते हैं, मानवीय संबंधों और समाज के लिए परमेश्वर की मूल योजना का हिस्सा नहीं थे। आरंभ से ही परमेश्वर की इच्छा थी कि विवाह एक स्थायी और पवित्र बंधन हो। जैसा कि उत्पत्ति 2:24 में लिखा है:

“इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से
मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे।”

परमेश्वर ने न तो तलाक को और न ही हत्या को आदर्श व्यवस्था के रूप में ठहराया। ये नियम मानव हृदय की कठोरता और मनुष्य की पापी अवस्था के कारण उत्पन्न हुए। यह बात यीशु मसीह की शिक्षा में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जिन्होंने विवाह और मानवीय संबंधों के लिए परमेश्वर की मूल इच्छा को पुनः स्थापित किया।

मूसा की व्यवस्था की पृष्ठभूमि

इस्राएल के लोगों ने मिस्र और आसपास की जातियों से कई रीति-रिवाज अपनाए थे, जैसे तलाक, बदला लेना और कठोर दंड। जब परमेश्वर उन्हें मिस्र से निकालकर प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर ले गया, तब भी उनके हृदय इन प्रथाओं से जुड़े हुए थे। उनकी आत्मिक अपरिपक्वता और हृदय की कठोरता के कारण परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इन नियमों को अस्थायी रूप से अनुमति दी।

यह परमेश्वर की ओर से एक अनुग्रहपूर्ण रियायत थी (जिसे धर्मशास्त्र में economy या दिव्य सहनशीलता कहा जाता है), न कि

उसके पूर्ण और सिद्ध इच्छा की अभिव्यक्ति।

यीशु स्वयं इसे मत्ती 19:3–9 में समझाते हैं:

3 तब फरीसी यीशु के पास आए और उसकी परीक्षा करते हुए कहा, “क्या किसी भी कारण से पत्नी को छोड़ देना उचित है?”
4 उसने उत्तर दिया, “क्या तुमने नहीं पढ़ा कि सृष्टिकर्ता
ने आरंभ में उन्हें नर और नारी बनाया,
5 और कहा, ‘इस कारण मनुष्य अपने पिता और माता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे’?”
6 इसलिए वे अब दो नहीं, परंतु एक तन हैं। जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।
7 उन्होंने कहा, “तो फिर मूसा ने क्यों आज्ञा दी कि तलाक का पत्र देकर पत्नी को छोड़ दिया जाए?”
8 यीशु ने कहा, “तुम्हारे हृदय की कठोरता के कारण मूसा ने तुम्हें तलाक की अनुमति दी; परंतु आरंभ से ऐसा नहीं था।”
9 मैं तुमसे कहता हूँ: जो कोई अपनी पत्नी को छोड़कर (व्यभिचार को छोड़कर) दूसरी से विवाह करता है, वह व्यभिचार करता है।

यहाँ यीशु स्पष्ट करते हैं कि विवाह परमेश्वर की योजना के अनुसार जीवनभर का बंधन है। मूसा द्वारा दी गई तलाक की अनुमति मनुष्य की पापी अवस्था के कारण थी, न कि परमेश्वर की आदर्श

इच्छा। इससे हम देखते हैं कि परमेश्वर मनुष्य की दुर्बलता को सहन करता है, परंतु पाप को स्वीकृति नहीं देता।

धर्मशास्त्रीय महत्व

यह शिक्षा हमें परमेश्वर की क्रमिक और बढ़ती हुई प्रकाशना को समझने में सहायता करती है। पुराने नियम में नैतिक सिद्धांतों के साथ-साथ ऐसे नागरिक और विधिक नियम भी हैं जो विशेष रूप से इस्राएल के वाचा-संदर्भ के लिए थे। इनमें से कई नियम मसीह की ओर संकेत करते हैं या उसमें पूर्ण होते हैं (इब्रानियों 8:13)।

मूसा की व्यवस्था एक शिक्षक के समान थी (गलातियों 3:24), जो परमेश्वर के लोगों को मसीह के आने तक मार्गदर्शन देती रही, जिसने व्यवस्था को सिद्ध और पूर्ण किया।

इसी कारण पौलुस रोमियों 1:28 में लिखता है:

“और क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को पहचानना उचित न समझा, इसलिए परमेश्वर ने उन्हें उनके भ्रष्ट मन के हवाले कर दिया कि वे अनुचित काम करें।”

परमेश्वर कभी-कभी मनुष्य को उसकी कठोर इच्छाओं के अनुसार चलने देता है, पर यह उसकी पूर्ण योजना नहीं है।

शत्रुओं और न्याय के प्रति परमेश्वर का हृदय

यह भी समझना आवश्यक है कि पुराने नियम में बदले और दंड से संबंधित नियम सीमित और नियंत्रित थे, ताकि हिंसा की बढ़ती हुई श्रृंखला को रोका जा सके (निर्गमन 21:23–25)। वे व्यक्तिगत प्रतिशोध के लिए नहीं, बल्कि न्याय के लिए थे।

परंतु मसीह में परमेश्वर का अंतिम प्रकाशन हमें और भी ऊँचे स्तर पर बुलाता है।

पहाड़ी उपदेश में यीशु कहते हैं (मत्ती 5:43–45):

43 तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, ‘अपने पड़ोसी से प्रेम रखो और अपने शत्रु से बैर।’
44 परंतु मैं तुमसे कहता हूँ, अपने शत्रुओं से प्रेम रखो और जो तुम्हें सताते हैं उनके लिए प्रार्थना करो,
45 ताकि तुम अपने स्वर्गीय पिता की संतान ठहरो।

यह हमें कानूनी और प्रतिशोधी सोच से निकालकर अनुग्रह, दया और मेल-मिलाप से भरे जीवन की ओर ले जाता है—जो स्वयं परमेश्वर के स्वभाव को दर्शाता है।

पौलुस इसे रोमियों 12:20–21 में और स्पष्ट करता है:

20 यदि तेरा शत्रु भूखा हो, तो उसे भोजन करा; यदि प्यासा हो,
तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर
अंगारे रखेगा।
21 बुराई से न हार, परंतु भलाई से बुराई पर जय पा।

यही परमेश्वर के राज्य की नीति है—प्रतिशोध नहीं, बल्कि प्रेम के द्वारा बुराई पर विजय।

निष्कर्ष

पुराने नियम की व्यवस्थाएँ गिरे हुए लोगों के प्रति परमेश्वर की धैर्य और करुणा को दर्शाती हैं। वे अंतिम वचन नहीं हैं, बल्कि परमेश्वर की उद्धार की योजना का एक भाग हैं।

यीशु मसीह आए ताकि विवाह, न्याय और मानवीय संबंधों के विषय में

□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□, □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□

□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□, □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□ □□□□, □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□

□□□□□□□□!

□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□

□□□□□□□□□, □□□□□□ □□□, □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□:
□ +255 693 036 618 □□ +255 789 001 312

□□ □□□□□□□□ □□ WhatsApp □□ □-□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□

Share on:
WhatsApp